पाठ 5.1 : ग्राम्य जीवन

डॉ. मुकुटधर पांडेय

C97IMB

मुकुटधर पांडेय *का जन्म 30 नवम्बर सन् 1885 ई. को छत्तीसगढ़ के जांजगीर–चाँपा जिले के बालपुर नामक गाँव में हुआ था। छायावाद का आरंभ इनकी रचनाओं से माना जाता है। उनकी रचना* ***कुररी के प्रति*** *प्रथम छायावादी रचना है। मानद डी. लिट् की उपाधि प्राप्त श्री पांडेय को भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया था। उनकी प्रमुख रचनाएँ* ***पूजा के फूल, शैलबाला, लच्छमा (अनूदित उपन्यास), परिश्रम (निबंध), मेघदूत (छतीसगढ़ी अनुवाद)*** *हैं।* ***ग्राम्य जीवन*** *कविता में कवि ने गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य एवं ग्रामवासियों की सहज जीवनशैली का जीवंत चित्रण किया है।*

छोटे–छोटे भवन स्वच्छ अति दृष्टि मनोहर आते हैं,
रत्न–जड़ित प्रासादों से भी बढ़कर शोभा पाते हैं।
बट–पीपल की शीतल छाया फैली कैसी है चहुँ ओर,
द्विजगण सुन्दर गान सुनाते, नृत्य कहीं दिखलाते मोर।

शांति पूर्ण लघु ग्राम बड़ा ही सुखमय होता है भाई,
देखो नगरों से भी बढ़कर इनकी शोभा अधिकाई।
कपट, द्वेष, छलहीन यहाँ के रहने वाले चतुर किसान,
दिवस बिताते हैं प्रफुल्लित चित, करते हैं अतिथि का मान।

आस–पास में है फुलवारी, कहीं–कहीं पर बाग अनूप,
केले, नारंगी के तरुगण दिखलाते हैं सुन्दर रूप।
नूतन मीठे फल बागों से नित खाने को मिलते हैं,
देने को फुलेल–सा सौरभ पुष्प यहाँ नित खिलते हैं।

पास जलाशय के खेतों में ईख खड़ी लहराती है,
हरी–भरी यह फसल धान की कृषकों के मन भाती है।
खेतों में आते हैं ये हिरणों के बच्चे चुप–चाप,
यहाँ नहीं है छली शिकारी जो धरते सुख से पदचाप।
कभी–कभी कृषकों के बालक उन्हें पकड़ने जाते हैं,
दौड़–दौड़ के थक जाते वे कहाँ पकड़ में आते हैं।
बहता एक सुनिर्मल झरना कल–कल शब्द सुनाता है,
मानो कृषकों को उन्नति के लिए मार्ग बतलाता है।

गोधन चरते कैसे सुन्दर गलघंटी बजती सुख मूल,
चरवाहे फिरते हैं सुख से देखो ये तटनी के कूल।
ग्राम्य जनों को लभ्य सदा, सब प्रकार सुख शांति अपार,
झंझट हीन बिताते जीवन, करते दान धर्म सुखसार।

शब्दार्थ

प्रासाद – महल; **द्विजगण** – पक्षीगण; **फुलेल–सा** – इत्र के समान; **लभ्य** – प्राप्त, सुलभ; **तटनी** – नदी।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने किसानों को छल–कपट और द्वेषहीन के साथ चतुर भी क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
2. गाँव के लोग किस प्रकार से झंझटहीन जीवन बिताते हैं?
3. कविता में गाँव के बाग–बगीचों की सुन्दरता का चित्रण किन पंक्तियों में किया गया है?
4. बहता हुआ झरना हमें किस प्रकार से जीवन जीने का संदेश देता है?

पाठ से आगे

1. आपके गाँव/शहर की ऐसी कौन–कौन–सी खास बातें हैं, जिसे आप सभी को बताना पसंद करेंगे? लिखिए।
2. आपने या आपके मित्र ने ऐसे किसी गाँव का भ्रमण किया हो, जहाँ के प्राकृतिक परिवेश/सुंदरता ने आपको प्रभावित किया हो, तो उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. कविता में गाँव में पाए जाने वाले पेड़–पौधों, फलों एवं फसल की बात की गई है। आपके आसपास के क्षेत्रों में कौन–कौन से पेड़–पौधों, फलों व फसल की पैदावार होती है? वर्णन कीजिए।
4. आजकल जंगली जीव–जंतु शहरों व गाँवों में क्यों घुस आते हैं? विचार कर लिखिए।

भाषा के बारे में

1. कविता में आए निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? कविता को ध्यानपूर्वक पढ़कर इन शब्दों के अर्थ पता करके लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की मदद भी ले सकते हैं।

   - प्रफुल्लित
   - अनूप
   - तरुगण
   - जलाशय
   - छली
   - सुनिर्मल
   - गोधन

2. हिन्दी भाषा की विशेषता है कि इसमें शब्दों की पुनरुक्ति की जा सकती है।

   (क) 'कल–कल', 'छोटे–छोटे' जैसे कई शब्दों का कविता में प्रयोग हुआ है। यहाँ एक ही तरह के शब्दों का पूर्ण रूप से दुहराव हुआ है। पाठ में आए ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए।

   (ख) शब्दों की पुनरुक्ति को कुछ उदाहरणों द्वारा और समझने का प्रयास करते हैं–

   - 'घर–घर' शब्द का अर्थ हैं– हर घर। इसमें संज्ञा की पुनरुक्ति हुई है।
   - 'जल्दी–जल्दी' शब्द में कोई क्रिया कैसे हो रही है, इसका पता चलता है। इसमें क्रियाविशेषण की पुनरुक्ति हुई है।
   - 'काला–काला' शब्द में काले रंग की और अधिकता का आभास होता है। यहाँ विशेषण शब्द की पुनरुक्ति हुई है।

   उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर दी गई तालिका में ऐसे अन्य शब्दों को सोचकर लिखिए (तालिका में एक उदाहरण दिया गया है।)

संज्ञा	क्रियाविशेषण	विशेषण
घर–घर	जल्दी–जल्दी	काला–काला

योग्यता विस्तार

1. समूह गतिविधि :–

   मनोहर, पीपल, शीतल, छाया, शोभा, मोटर, झरना, सुंदर, पुष्प, फसल।

   उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए साथियों के समूह में मिलकर एक नई कविता बनाइए। आप इस कार्य में अपने शिक्षक की सहायता ले सकते हैं।

   इन कविताओं को कक्षा/प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें और कक्षा में चार्ट पेपर पर प्रदर्शित कीजिए।

2. सुमित्रानंदन पंत की कविता **'ग्राम श्री'** की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। यदि संभव हो तो पुस्तकालय से खोजकर पूरी कविता पढ़िए।

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल सी कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चाँदी की–सी उजली जाली।
तिनकों के हरे–हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू–तल पर झुका हुआ
नभ का चिर–निर्मल नील फलक।

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ, गेहूँ में बाली,
अरहर, सनई की सोने की
किंकिणियाँ हैं शोभाशाली।
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली–पीली,
लो, हरित–धरा से झाँक रही
नीलम की कलि, तीसी नीली।